International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.381-388

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का सामाजिक–आर्थिक विकास पर प्रभावः चूरू ब्लॉक–जिला चुरू, राजस्थान का एक भौगोलिक अध्ययन

अरविंद कुमार जाखड़*

शोध सारांश

''एक राष्ट्र की सम्पूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति सड़कों पर ही निर्भर है।'' –एरिकन

परिवहन मार्गों को देश में रक्त परिसंचरण तंत्र की तरह माना जा सकता है। ''किसी राष्ट्र की सामाजिक–आर्थिक उन्नति में सड़के वही कार्य करती है, जिस प्रकार स्वस्थ शरीर के प्रत्येक अंग में रक्त प्रवाह एक जाल के रूप में फैली धमनियाँ व शिराएँ करती हैं। इसी भाँति सड़के राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के आधारभूत तत्व यथा मानव, माल एवं विचारों को देश के कोने–कोने में पहुँचाती है। भारत देश की कुल आबादी का 68.84 प्रतिशत (83.3 करोड़) भाग गांवों में अधिवासित है। (जनगणना 2011) अतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था प्रधान देश में ग्रामीण सड़कों का विकास महत्वपूर्ण हैं। ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर ग्रामीण क्षेत्रों के विकास हेतु अनेक योजनाओं का विकास व निर्माण किया गया है। इन्हीं में से एक 'प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना'(पी.एम.जी.एस.वाई.) है, जो 25 दिसम्बर, 2000 को असम्बद्ध अधिवासों को अन्य गांवों, ढाणियों/मजरों, कस्बों, नगरों से सड़क मार्ग द्वारा जोड़ने हेतु प्रारम्भ की गई। प्रस्तुत अध्ययन में PMGSY से जुड़े लोगों और सम्बद्ध अधिवासों का सामाजिक–आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र में सड़क परिवहन विकास से गाँवों व शहरों के बीच मानव प्रवसन व माल (सामग्री) के संचार में वृद्धि, परिवहन लागत में कमी, कृषि उपज की बाजार व मण्डी तक सुगमता से पहुँच होने से उचित मूल्य लाभ में वृद्धि तथा गैर कृषि क्षेत्र व अन्य सेवाओं में रोजगार के अवसरों, वार्षिक आय में वृद्धि हुई है जिसके कारण स्थानीय आबादी के जीवन स्तर में भी सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

मुख्य शब्दः *पी.एम.जी.एस.वाई., सामाजिक, आर्थिक, विकास, जीवनस्तर, रोजगार, वार्षिक आय, ग्रामीण जुड़ाव, कृषि उत्पादकता, गरीबी निवारण, परिवहन लागत।*

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति एवं उन्नति वहाँ पाये जाने वाले संसाधनों के अनुकूलतम उपयोग पर निर्भर करती है और इस हेतु विकसित सड़क परिवहन जाल की भूमिका महत्वपूर्ण है। भारत देश के 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में करीब छह लाख उनपचास हजार गाँवों में अधिवासित मानव समूह को स्तरीय बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध कराना किसी भी सरकार के लिए चुनौती के साथ–साथ अवसर भी है। इन सुविधाओं में बिजली, पानी, आवास, सड़क, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मुलभूत आवश्यकताएँ है। भारत सरकार ने असम्बद्ध (अनकनेक्टेड) ग्रामीण क्षेत्रों को सड़क मार्गों से जोड़ने हेतु तीव्र, समग्र व सतत् विकास उपलब्ध कराने व ग्रामीण भारत का सामाजिक–आर्थिक रूपान्तरण करने के उद्देश्य स्वरूप ''प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना'' 25 दिसम्बर 2000 को प्रारम्भ की। जिसका प्राथमिक उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों के असम्बद्ध अधिवासों को सभी मौसमों वाली सड़क (All Weather Road) सम्बद्धता उपलब्ध कराना एवं ग्रामीण सड़कों का उन्नयन

---

[6] शोधार्थी, भूगोल विभाग,मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान।

करना है। इस योजना के अन्तर्गत मैदानी क्षेत्रों में 500 व इससे अधिक की आबादी के सभी गांवों को तथा पहाड़ी राज्यों, जनजातीय व मरुस्थलीय क्षेत्रों में 250 व इससे अधिक आबादी के सभी गांवों/ढाणी/मजरों को सभी मौसम अनुकूल सड़कों से जोड़ा जाना प्रस्तावित है। इस योजना को राज्य में लागू करने हेतु ''राजस्थान ग्रामीण सड़क विकास एजेन्सी'' नोडल एजेन्सी के रूप में कार्य करती है।

ग्रामीण आर्थिक विकास सड़कों के जुड़ाव से विभिन्न प्रकार से प्रभावित होता है जैसे – गरीबी निवारण, उत्पादकता में वृद्धि, कृषि भूमि उपयोग व फसल प्रारूप में परिवर्तन, वित्तीय सेवाओं व रोजगार अवसरों में वृद्धि, गत्यात्मकता, कृषि विकास में उन्नत बीज व उर्वरकों की उलब्धता, कृषि में आधुनिक मशीनीकरण की सुलभता, कृषि उपजकी बाजारमण्डी तक सुगम पहुँच, बाजारों का विस्तार होना, धार्मिक स्थलों व पर्यटन केन्द्रों का विकास एवं ग्रामीण उद्योगों का विकास आदि। ग्रामीण सड़क विकास से यात्री व माल परिवहन सुविधाओं का विस्तार व परिवहन साधनों के उपयोग में बढ़ोत्तरी भी देखने को मिली है। जिसका प्रभाव परिवहन लागत में कमी तथा समय की बचत आदि रूप में देखने को मिला। इसके साथ–साथ सड़क मार्गों के विकास से सामाजिक विकास भी प्रभावित हुआ है जिसमें शैक्षिक संस्थानों तक पहुँच में सुगमता, स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, जीवन स्तर में सुधार, सामाजिक रीति–रिवाजों एवं रिश्तों में बदलाव आदि प्रमुख है।

v/;;u {k=

अध्ययन क्षेत्र चुरू ब्लॉक का अक्षांशीय विस्तार 28°08′ से 28°35′ उत्तरी अक्षांश व देशांतरीय विस्तार 74°38′ से 75°12′ पूर्वी देशान्तर तक है। ब्लॉक की उत्तरी सीमा चुरू जिले की तारानगर ब्लॉक, पश्चिमी सीमा सरदारशहर ब्लॉक, दक्षिणी सीमा रतनगढ़ ब्लॉक से तथा पूर्वी सीमा झुंझुनूँ (बिसाऊ) व सीकर जिलों से लगती है। ब्लॉक का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 1607 वर्ग किमी. है जिसमें 15,56.46 वर्ग किमी. ग्रामीण क्षेत्र तथा 50.65 वर्ग किमी शहरी क्षेत्र सम्मिलित है एवं कुल जनसंख्या 3,10,562 है जिसमें 1,32,998 शहरी जनसंख्या व 177564 ग्रामीण जनसंख्या है। चुरू ब्लॉक का जनघनत्व 193 प्रति वर्ग किमी. है तथा यहाँ 108 कुल आबाद ग्राम व 1 गैर आबाद ग्राम है तथा कुल 35 ग्राम पंचायत है। (जनगणना, 2011) ब्लॉक मुख्यालय से राष्ट्रीय उच्च मार्ग संख्या 65 गुजरता हैं जो कि हरियाणा के अम्बाला को पाली (राज.) से जोड़ता हैं। इसी प्रकार बीकानेर–दिल्ली रेलमार्ग भी यहीं से होकर गुजरता हैं।

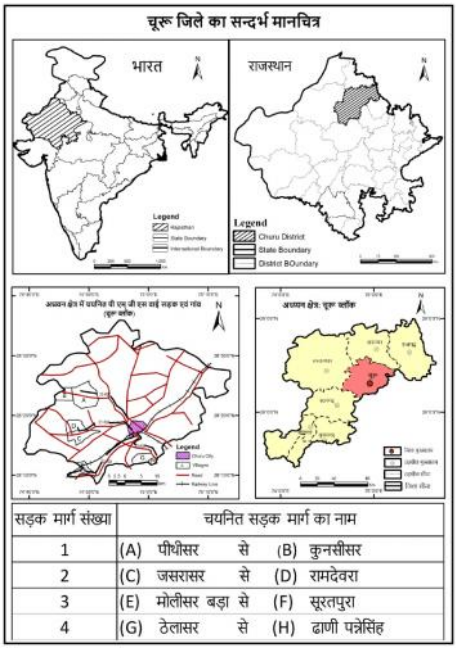

सड़क मार्ग संख्या	चयनित सड़क मार्ग का नाम
1	(A) पीथीसर से (B) कुनसीसर
2	(C) जसरासर से (D) रामदेवरा
3	(E) मोलीसर बड़ा से (F) सूरतपुरा
4	(G) ठेलासर से (H) ढाणी पन्नेसिंह

ekufp= 1

'kks/k mís'; ,oa fof/k ra=

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का अध्ययन क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन व मूल्यांकन करना है। इस हेतु शोधकर्ता द्वारा अध्ययन क्षेत्र से 4 सड़क मार्गों (पीएमजीएसवाई) का जनसँख्या समूह के आधार पर गांवों का चयन स्तरित विधि द्वारा किया गया। चयनित प्रत्येक गांव से 10–10 उत्तरदाताओं का चयन करते हुए कुल 80 उत्तरदाताओं का चयन किया गया हैं। चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची व समूह चर्चा के माध्यम से प्राथमिक आंकड़ों का संकलन किया गया। व्यक्तिगत सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों को सारणी व आरेख के माध्यम से सामाजिक–आर्थिक विकास के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन किया गया है।

rkfydk 1% pq: Cykd esa ih,eth,lokbZ dk foLrkj

		fd, x, dk;Z			
		ubZ lEidZrk		mUu;u	
Øe la[;k	Cykd dk uke pq:	lM+dksa dh la[;k	lM+d dh yEckbZ ¼fdeh- esa½	lM+dksa dh la[;k	lM+d dh yEckbZ ¼fdeh- esa½
1	2000-01	0	0.000	5	6.000
2	2001-02	1	3.450	0	0.000
3	2002-03	1	3.000	0	0.000
4	2003-04	3	11.920	0	0.000
6	2005-06	1	2.500	0	0.000
7	2006-07	2	7.200	0	0.000
8	2007-08	2	10.000	0	0.000
9	2008-09	0	0.000	1	23.160
10	2009-10	0	0.000	3	38.950
11	2017-18	0	0.000	1	7.250
12	कुल	10	38.070	10	75.360

स्त्रोत : प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, ऑनलाइन प्रबंधन, निगरानी और लेखा प्रणाली,http://omms.nic.in/Home/CitizenPaqe/#

rkfydk 2% p;fur lM+d ekxksZa dk fooj.k

सड़क मार्ग संख्या		1	2	3	4
चयनित सड़क मार्ग का नाम		पीथीसर से कुनसीसर	जसरासर से से रामदेवरा	मोलीसर बड़ा सेसुरतपुरा	ठेलासर से ढाणी पन्नेसिंह
गाँव का नाम		पीथीसर	जसरासर	मोलीसर बड़ा	ठेलासर
जनसंख्या	कम	4254	2422	1320	2320
	2011	5059	3636	1450	2678
गाँव का नाम		कुनसीसर	रामदेवरा	सुरतपुरा	ढाणी पन्ने सिंह
जनसंख्या	2001	1593	992	1023	282
	2011	1496	1201	1252	365
सड़क निर्माण वर्ष		2001	2006–07	2006–07	2007
सड़क मार्ग की लम्बाई (किमी. में)		3५5	2	3	7

स्रोत : जनगणना 2001, 2011 व सार्वजनिक निर्माण विभाग, जिला चूरू

lkekftd fodkl ij çHkko

अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक विकास के अंतर्गत शैक्षिक, प्रशासनिक एवं स्वास्थ्य सेवाओं के विभिन्न पक्षों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया गया–

vkj[k 1

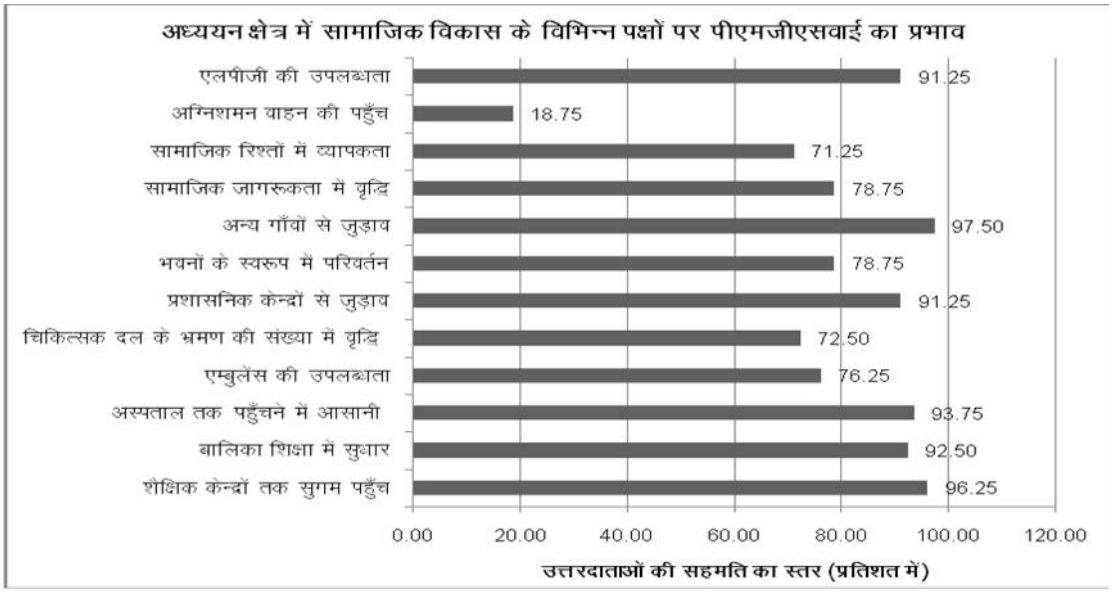

स्त्रोतः क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर शोधार्थी द्वारा निर्मित, 2019

- **शिक्षा पर प्रभाव**
  - **शैक्षिक केन्द्रों तक सुगम पहुँच**–क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि सड़क मार्ग द्वारा जुड़ने से पहले इस क्षेत्र में प्राथमिक स्तर के बच्चे विद्यालय जाने में आवागमन की दृष्टि से असहजता महसूस करते थें या फिर बीच सत्र में विद्यालय छोड़ देते थे।मगर सड़क मार्ग विकास उपरांत परिवहन सुविधा उपलब्ध होने से बालक–बालिकाएँ विद्यालय जाने के लिए एक गांव से दूसरे गांव आसानी से पहुंचते हैं। साथ ही निजी शिक्षण संस्थानों द्वारा भी बाल वाहिनी की सुविधा गाँव/ढाणी तक उपलब्ध हो पायी हैं। 96.25 प्रतिशत उत्तरदाता इस बात से सहमत हैं कि पीएमजीएसवाई से पढ़ने वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक केन्द्रों तक पहुँच में सुगमता हुई हैं।
  - **बालिका शिक्षा में सुधार**–अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि पीएमजीएसवाई के प्रभाव से बालिका शिक्षा में सुधार हुआ है। 92.50 उत्तरदाता इस बात से सहमत है कि छात्राएं गांव में उपलब्ध विद्यालय स्तर तक की पढ़ाई कर पाती थी क्योकि गांव में आवागमन सुविधा के अभाव में बालिका विधालय/महाविद्यालय तक पहुंच पाने में असमर्थ रहती थीं। परंतु अब सड़क मार्ग से जुड़े गांवों में सार्वजनिक यातायात के साधनों की सुविधा उपलब्ध होने लगी है। इसके साथ आज गांव की बालिकाएं साइकिल, दुपहिया वाहन, आदि से महाविद्यालय तक आसानी से व नियमित रूप से पहुंच पा रही हैं। इससे बालिकाओं को उच्च शिक्षा भी सुलभ हो पाई है। इसके अतिरिक्त चूरू शहर से कुछ शिक्षण संस्थानों से छात्र वाहिनी बसे दैनिक रूप से सड़कों से जुड़े गाँवों के विद्यार्थियों को लाने व ले जाने हेतु आती हैं।
- **स्वास्थ्य सेवाओं पर प्रभाव**
  - **अस्पतालों तक आसान पहुंचः** सड़क निर्माण से पहले आवागमन के साधनों के अभाव में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र या जिला अस्पताल तक पहुंच पाना मुश्किल होता था मगर सड़क निर्माण के उपरांत परिवहन साधनों की सुलभता से किसी भी स्तर के अस्पताल तक पहुंच पाना बहुत आसान हो गया है। क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान 93.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सड़क निर्माण से अस्पतालों तक कम समय में आसानी से पहुंच कर सेवाओं का लाभ ले रहे हैं।

- **एम्बुलेंस की उपलब्धताः** क्षेत्र सर्वेक्षण से 76.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि सड़क निर्माण से एंबुलेंस सुविधा की पहुंच में आसानी हुई और दुर्घटना एवं प्रसव के समय अस्पताल पहुंचने में लगने वाले समय में काफी कमी आयी जिससे समय रहते उचित उपचार मिल पाता है।
- **चिकित्सक दल के भ्रमण की संख्या में वृद्धिः** भले ही सरकार की हर व्यक्ति को चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने की मंशा रही हो परंतु गाँवों में आवागमन हेतु पक्के रास्तों के अभाव में सामयिक अंतराल पर आने वाले चिकित्सक दल के भ्रमण की संख्या बहुत कम होती थी। 72.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि सड़क निर्माण से चिकित्सा टीम के दौरों की संख्या में इजाफा हुआ तथा टीकाकरण से वंचित बच्चों को स्थानीय स्तर (घर/स्कूल/आँगनवाड़ी केन्द्रों) पर टीके लगाये जाने में आसानी हुई है।

- **प्रशासनिक केन्द्रों से जुड़ाव**

पीएमजीएसवाई द्वारा सड़क निर्माण से इन गांवों तक प्रशासनिक सुविधा की सुलभता सुनिश्चित हुई है। समूह चर्चा व उत्तरदाताओं (91.25 प्रतिशत) से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सड़कों के अभाव में इन क्षेत्रों में प्रशासनिक अधिकारियों के दौरे न के बराबर होते थें परंतु सड़क निर्माण से स्थानीय ग्रामीणों की प्रशासनिक केन्द्रों तक सुविधाजनक पहुँच में वुद्धि हुई है जिससे प्रशासन से जुड़ाव के साथ–साथ विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों व योजनाओं की जानकारी समय–समय पर मिलती रहती है।

- **भवनों के स्वरूप में परिवर्तन**

पीएमजीएसवाई के उपरांत ग्रामीणों की पहुँच शहरों तक सुगमता के साथ अधिक हो गई है। जिसका प्रभाव भवन निर्माण प्रतिरूप व सामग्री पर अधिक स्पष्ट देखने को मिलता है। 78.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि आजकल गांवों में भी परिवहन सेवाओं के विस्तार से भवन निर्माण सामग्री उचित दर व कम लागत पर आसानी से सर्व सुलभ हो पा रही है।

- **सामाजिक जागरूकता में वृद्धि**

अध्ययन क्षेत्र में सड़क विकास से लोगों का आपसी सम्पर्क बढ़ा है जिससे सामाजिक जागरूकता में वृद्धि हुई है। जैसे बालिका शिक्षा व महिलाओं की सहभागिता, परिवार नियोजन में सुधार तथा अंधविश्वास रूढ़िवादिता, दहेज प्रथा, बाल–विवाह, मृत्यु भोज आदि में कमी देखने को मिली है।

- **सामाजिक रिश्तों में व्यापकता**

71.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सड़कों के निर्माण से गांव वालों का सामाजिक संपर्क दूर–दराज के गांवों या क्षेत्रों से भी होने लगा है। जिससे सामाजिक रिश्ते नातों में व्यापकता देखने को मिलती है। इसलिए पीएमजीएसवाई से ग्रामीणों की सामाजिक व सामुदायिक कार्यक्रमों में भागीदरी में वृद्धि हुई हैं।

- **अग्निशमन वाहन की पहुँच**

ग्रामीण क्षेत्रों में आगजनी घटनाएं घरों/झोपड़ीं या फिर खेत–खलिहानों में होने से आग बुझाने हेतु शहर/नगर निगम/नगर पालिका से अग्निशमन वाहन की पहुंच पक्की सड़क अभाव में बिल्कुल भी नहीं है अर्थात गांवों में ऐसी घटनाओं पर काबू पाने के लिए ग्रामीणों द्वारा ही अपने स्तर पर प्रयास किए जाते हैं। केवल 18.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सड़क बनने के बाद अग्निशमन वाहन की पहुंच संभव हो पायी है जो न के बराबर है। क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान देखने को मिला कि अग्निशमन वाहन की पहुंच केवल उन्हीं गांवों में है जो शहर/तहसील मुख्यालय/नगरपालिका से कम दूरी पर स्थित है तथा जहां सड़क सुविधा है।

- **एलपीजी की उपलब्धता**

अध्ययन क्षेत्र में 91.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सड़क बनने के बाद विभिन्न गैस एजेंसियों से नियमित गैस वितरण वाहन घर व गांवों तक पहुंच पा रहे हैं तथा साथ ही आवश्यकता होने पर स्वयं के वाहन, सार्वजनिक परिवहन द्वारा भी ग्रामीणों की पहुंच गैस एजेंसी तक संभव हो पायी हैं।

आर्थिक विकास पर प्रभाव

अध्ययन क्षेत्र में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन निम्नांकित बिंदुओं के माध्यम से किया गया है–

आरेख संख्या : 2

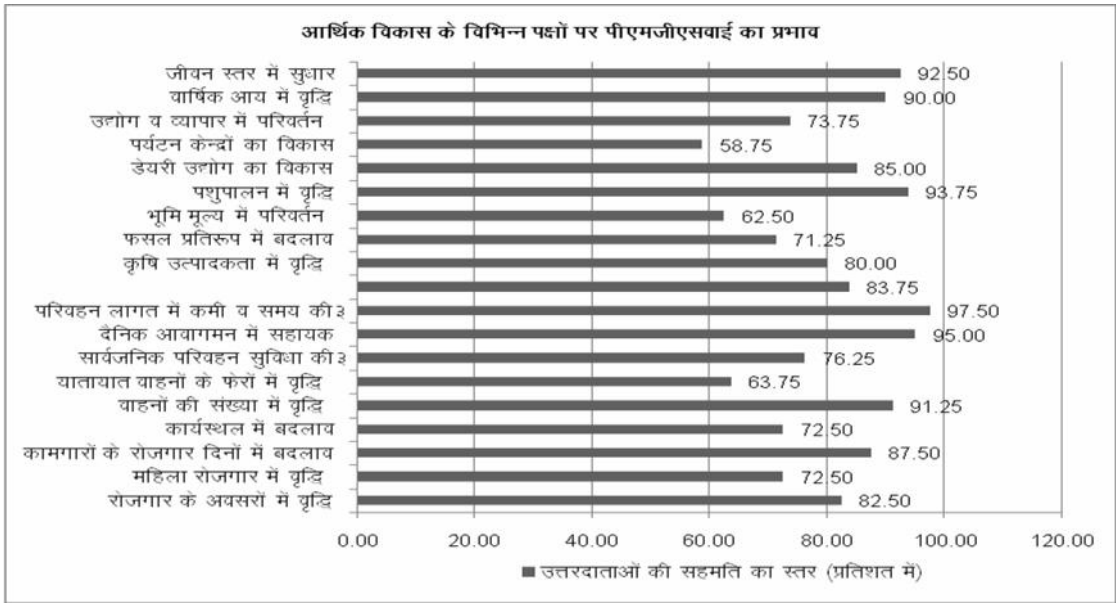

स्त्रोत : क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त आँकड़ों से शोधार्थी द्वारा निर्मित, 2019

- **रोजगार के अवसरों में वृद्धि :** आरेख संख्या–2 के अनुसार 82.50 उत्तरदाताओं का मानना है कि गांव सड़क मार्ग से जुड़ने से रोजगार के नए अवसरों का सृजन हुआ। सड़क निर्माण से श्रमिक वर्ग, कर्मचारी वर्ग व बेरोजगार वर्ग की गांव व शहर दोनों में ही आसानी से उपलब्धता हो पायी है। समूह चर्चा में ग्राम वासियों ने बताया कि सड़क मार्ग बनने से पहले बहुत सारी दैनिक आवश्यकता के सामानों की पूर्ति हेतु निकटवर्ती शहरों पर निर्भर रहना पड़ता था जबकि सड़क के आने से स्थानीय लोगों को रोजगार के अनेक विकल्प मिले जिनमें फल–सब्जियों, आटा–चक्की दुकान, किराणा स्टोर, हेयर ड्रेसर, टेलर, वाहन सर्विस सेन्टर, हार्डवेयर–फर्नीचर उद्योग, ई–मित्र व मेडिकल की दुकान आदि प्रमुख है।
- **परिवहन लागत में कमी व समय की बचत :** पीएमजीएसवाई ने ग्रामीण जनसंख्या को एक–दूसरे क्षेत्रों से जोड़ने का काम किया है क्योंकि इसके माध्यम से गावों व शहरों के बीच की दुरी कम हो गयी हैं। अध्ययन क्षेत्र थार मरुस्थल का भाग होने से, सड़क मार्ग से पहले इन गांवों में सरकारी बस व निजी आवागमन साधनों का अभाव था।अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों में 97.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि आपसी संपर्क बढने के साथ–साथ समय की बचत भी हो रही है। ये इस बात पर पूर्ण सहमत हैं कि सड़क मार्ग विकास से संपर्क सुविधा बढ़ने से परिवहन लागत में कमी आई हैं।
- **वाहनों की संख्या में वृद्धि :** सड़क मार्ग निर्माण से पहले अध्ययन क्षेत्र में वाहनों की संख्या कम थी सड़क निर्माणोंपरांत सर्वाधिक वृद्धि दुपहिया वाहनों की हुई, इसके साथ ही चौपहिया वाहनों की संख्या भी बढ़ी हैं। 91.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि पीएमजीएसवाई से गांव की कनेक्टिविटी होने से वाहनों की गतिविधियों व संख्या में भारी इजाफा हुआ है।

- **परिवहन वाहनों के फेरों में वृद्धि :** अध्ययन क्षेत्र सर्वेक्षण व समूह चर्चा से इस तथ्य की प्रमाणिकता मिलती है कि वाहनों की संख्या में वृद्धि होने से फेरों में भी वृद्धि दर्ज की गई। जिससे ग्रामीणों की आसानी से शहरों तक पहुँच तथा अपने काम उपरान्त प्रतिदिन वापस अपने घर तक पहुँचने में सुलभता हुई हैं।
- **भूमि मूल्य :** 62.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं की सहमति है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना का सबसे बड़ा आर्थिक प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि मूल्य में वृद्धि के रूप में देखने को मिलता है। इससे गांवों में न केवल सड़क मार्ग के नजदीक बल्कि दूरी पर स्थित कृषि व आवासीय भूमि की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि दर्ज की गई। इस दौरान भूमि उपयोग में भी परिवर्तन हुआ है। जहां पहले या तो बंजर भूमि थी या कृषि की जाती थी वहां पर अब अन्य व्यावसायिक गतिविधियां भी विकसित हो रही हैं।
- **पशुपालन में वृद्धि :** अध्ययन क्षेत्र में 93.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि सड़क विकास से कृषि के साथ–साथ पशुपालन व्यवसाय में भी वृद्धि हुई हैं जिसमें मुख्यतः भेड़, बकरी, गाय, भैंस, ऊँट तथा मुर्गीपालन हैं। अध्ययन क्षेत्र में स्थानीय स्तर पर पशु मेलों का भी आयोजन होता है जिससे लोगों को उचित मूल्य पर पशु खरीदने व बेचने में आसानी हुई है।
- **डेयरी उद्योग का विकास :** 85.00 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि ग्रामीण क्षेत्रो में पीएमजीएसवाई सड़क मार्ग विकास से दूध संकलन वाहनों की पहुँच घरों तक सुगमता से हो पायी हैं जिससे ग्रामीणों को दुग्ध एवं दुग्ध से सम्बन्धित उत्पादों जैसे–मावा, पनीर आदि का उचित मूल्य मिलने से उनकी आय में वृद्धि हुई है।
- **फसल प्रतिरूप में बदलाव :** क्षेत्र सर्वेक्षण से 71.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के उपरांत कृषि में उन्नत बीजों, उर्वरकों की उपलब्धता, कृषि उपजों की बाजार व मंडी तक पहुँच में सुगमता, कृषि उपजों के उचित मूल्यों की प्राप्ति, कृषि में आधुनिक मशीनीकरण के उपयोग में वृद्धि आदि सम्मिलित कारकों के कारण फसल प्रतिरूप में बदलाव हुआ है जिससे क्षेत्र में व्यवसायिक कृषि मुख्यतः ग्वारपाठा (एलोवेरा) की खेती का मार्ग प्रशस्त हुआ हैं।
- **वार्षिक आय में वृद्धि :** अध्ययन क्षेत्र में सड़क मार्ग निर्माण से पहले आर्थिक रूप से कृषि ही एकमात्र कार्य था। सड़क मार्ग जुड़ाव से गांव में रोजगार के नए अवसर सृजित हुए एवं गांव की कार्यशील जनसंख्या, दिहाड़ी मजदूरों को शहरों तक पहुँचने का साधन मिला। दैनिक आवागमन होने से श्रमिक व छात्र वर्ग को शहर में ठहरने हेतु अतिरिक्त खर्चे से भी मुक्ति मिली हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन केन्द्रों तथा स्थानीय मेलों, धार्मिक स्थलों आदि के विकास से स्थानीय महिलाओं को भी विभिन्न रूपों में रोजगार प्राप्त हुए हैं। 90 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्थानीय लोगों को कृषि व पशुपालन के अलावा दूसरे स्रोतों से भी आय हो रही है।
- **उद्योग एवं व्यापार :** गाँव व ढाणियों का पीएमजीएसवाई सड़कों से जुड़ने से आवागमन के साधनों में वृद्धि हुई,जिससे आर्थिक गतिविधियों के लिए कच्चा माल या उत्पाद की पहुंच संभव हो पायी है। क्षेत्र सर्वेक्षण से प्राप्त आंकड़ों में 73.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना है कि प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क मार्ग के निर्माण से लघु उद्योग व छोटे–छोटे व्यापारिक इकाइयों का विकास हुआ हैं जैसे– ईंट भट्टा उद्योग, भवन निर्माण सामग्री उद्योग, वजन कांटा, लौह एवं एल्युमिनियम उद्योग, वाहन सर्विस सेन्टर उद्योग, डेयरी उद्योग, किराणा स्टोर, अनाज मंडी, हार्डवेयर–फर्नीचर उद्योग, ऐलोवेरा प्रोसेसिंग प्लांट आदि।
- **पर्यटन केन्द्रों का विकास :** अध्ययन क्षेत्र में सड़क विकास से पर्यटन का सामाजिक व सांस्कृतिक क्रिया के साथ–साथ आर्थिक गतिविधियों में भी योगदान बढ़ा हैं। क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान 58.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि क्षेत्र का सड़क मार्ग से जुड़ने के उपरांत स्थानीय पर्यटन (धार्मिक व तीर्थ स्थलों, स्थानीय मेलों, अन्य आयोजनों आदि विविध रूप में) सामाजिक–सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ–साथ आर्थिक उन्नति का भी परिचायक बन गया है।

- **जीवन स्तर में सुधारः** सड़क विकास में ग्रामीण आबादी के सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास में चहुँमुखी बदलाव व सुधार होने तथा परिवहन सेवाओं में विस्तार से संसाधनों के उपभोग में वृद्धि के साथ जीवन स्तर में सुधार हुआ है।

fu"d"k

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से ग्रामीण भारत का स्वरूप बदल रहा है। जिसके माध्यम से न केवल ग्रामीण आबादी को आवागमन व माल वहन हेतु सड़क परिवहन की सुविधा उपलब्ध होती है बल्कि इसके सहारे सामाजिक–आर्थिक विकास का मार्ग भी प्रशस्त हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में पीएम.जी.एस.वाई. द्वारा सुगम सड़क परिवहन व सड़क संयोजन की अभिगम्यता में वृद्धि होने से चहुँमुखी आर्थिक विकास के साथ–साथ लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में ग्रामीण सड़क विकास से कृषि भूमि फसल प्रतिरूप में बदलाव स्वरूप व्यावसायिक कृषि जैसे– गवारपाठा (एलोवेरा) की खेती, ककड़ी, तरबूज, खरबूज एवं सब्जियाँ आदि के रूप में बड़ा परिवर्तन देखने को मिला है। ग्रामीण सड़के विभिन्न दूर–दराज गाँवों के मध्य सम्पर्क के साथ–साथ कस्बों, शहरों/नगरों और औद्योगिक केन्द्रों को उनके पृष्ठ प्रदेशों से भी जोड़ती है जो सामाजिक–आर्थिक उन्नति का परिचायक है।

अध्ययन क्षेत्र में सड़क सम्बद्धता से धार्मिक स्थलों पर विभिन्न आयोजनों एवं पर्यटन केन्द्रों के विकास से स्थानीय लोगों के साथ–साथ सड़क से जुड़े अन्य गाँवों के लोगों को भी रोजगार प्राप्त हुआ है। इस योजना द्वारा सड़क विकास से कृषकों, गैर कृषि मजदूरों तथा अकुशल श्रमिकों को भी अन्य गांवों, कस्बों, नगरों एवं औद्योगिक क्षेत्रों से जुड़ाव होने से अधिक रोजगार अवसर प्राप्त हुए जिससे उन्हें काम या मजदूरी के अनेक विकल्प मिलने से उनकी वार्षिक आय में भी वृद्धि हुई। अध्ययन क्षेत्र में विभिन्न आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है की अध्ययन क्षेत्र में प्रधानमन्त्री ग्राम सड़क योजना का सामाजिक–आर्थिक विकास के विभिन्न आयामों में सकारात्मक योगदान हैं।

lanHk xzUFk lph

- Itewar, M. & Anand, U. 2019. An Impact of Pradhan Mantri Gram Yojana (PMGSY) on Non-Agricultural Labourers: an Empirical Study in Sagar District. International Journal of Humanities and Social Science Invention, 8(2) : 44-49.
- Biswas, R. & Anwaruzzaman, A. K.M. 2018. Impact of PMGSY on Socio-Economic Development: A Case Study of Chandpur-Kushabaria Road, Murshidabad District, West Bengal. The Konkan Geographer, 19, 31-39.
- Singh, Y. 2015. Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana : Analytical Study of the development of the Bastar District. International Journal of Research in Commerce & Management, 6(6) : 104-106.
- Hutington, E- et all 1933. Economic and Social Geography, J-willey and sons Inc- London, New York.
- Ahmed, A. 1999. Social Geography, Rawat Publication] Jaipur&New Delhi] Pg- 13-37.
- कौशिक, देवेश. 2012. परिवहन भूगोल, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली
- यादव, राम गणेश. 2014. भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास, ओरिएंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 18–27
- बंसल, सुरेश चन्द्र. 2019. पर्यटन भूगोल एवं यात्रा प्रबन्धन, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, पृ. 42–47
- कुरुक्षेत्र दिसम्बर. 2018. प्रकाशन विभाग, भारत सरकार
- जिला जनगणना पुस्तिका– जिला चुरू 2011– भारतीय जनगणना विभाग
- जिला सांख्यिकी पुस्तिका –जिला चुरू 2017–18 आर्थिक एवं सांख्यिकीय निदेशालय, जयपुर

Websites

- www.pmgsy.nic.in
- www.dmms.nic.in

❖◆❖